राजनीतिक तरकस

RNI NO.: DELHIN/2016/70363

देश का सबसे तेज साप्ताहिक

मूल्य : ₹5

■ वर्ष : 01 ■ अंक : 07 ■ पृष्ठ : 08 ■ नई दिल्ली

■ बुधवार ■ 09 नवम्बर, 2022 (09 नवम्बर से 15 नवम्बर 2022)

राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार

जामिया हमदर्द विश्वविद्यालय में वंदे मातरम

राष्ट्रीय सुरक्षा मंच के कार्यक्रम मे जुडे सैंकडों लोग

दिल्ली ब्यूरो
Rajneetiktarkas.in

मेरे देश उदास न हो, फिर दीप जलेगा, तिमिर ढलेगा

यह जो रात चुरा बैठी है चांद सितारों की तरुणाई,

बस तब तक कर ले मनमानी जब तक कोई किरन न आई,

हिंदी के सुप्रसिद्ध कवि 'गोपालदास नीरज' की यह प्रसिद्ध कविता 'तिमिर' की यह पंक्तियां

उस वक्त जीवंत हो उठी जब उत्तर भारत के शिक्षा के सबसे बड़े केंद्रों में शुमार जामिया हमदर्द विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय सुरक्षा जागरण मंच के कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो. मो. अफशार आलम ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नारे एक भारत श्रेष्ठ भारत के साथ न सिर्फ चलने का आह्वान किया बल्कि विश्वविद्यालय को आत्मनिर्भर भारत की प्रयोगशाला के रूप विकसित करने का आश्वासन भी दिया यह नहीं कार्यक्रम के अंत में आजादी का उद्घोष रहे 'वंदे मातरम' के नारों से गूंज उठा। मजहब की आड़ में वंदे मातरम के नारे से अब तक परहेज करते रहे समुदाय के बीच लगे इस नारे ने यह स्पष्ट कर दिया कि जब परिवार के मुखिया की नियत साफ, दृष्टि स्पष्ट हो तो विचारों पर सदियों से पड़ी धुंध पलों में छट जाती है।

मौका था राष्ट्रीय सुरक्षा जागरण मंच, दिल्ली प्रदेश एवं जामिया हमदर्द विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में आजादी की 75 वीं वर्षगांठ पर 'आजादी का अमृत महोत्सव' के उपलक्ष्य में एक भारत श्रेष्ठ भारत तथा आत्मनिर्भर भारत, के लक्ष्य को साकार करने के लिये व्याख्यानमाला का।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य इंद्रेश कुमार ने कहा कि आज की यह सभा ना सियासी है ना मजहबी बल्कि आपसी भाईचारे की सभा है। इस्लाम में भी वतन के लिए कहा गया है कि वतन की मुहब्बत आधा ईमान है और इसे जन्नत जाने का रास्ता खुलता है। पैगंबर साहब ने भी हिन्दुस्तान के बारे में कहा है कि जब-जब मैं तन्हा और तनहाई में होता हूं पूर्व में हिन्द नाम की जगह है उसकी तरफ देखता हूं जहां से सुकून की हवा आती है। डीएनए पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि मेरी नजर में डीएनए है डी मतलब ड्रीम, एन मतलब नेटिव नेशन और ए मतलब एनसेस्टर और इस बात को साबित करने के लिए मैंने 25 हजार लोगों पर एक प्रयोग किया जिसमें कराची और ढाका भी शामिल थे। इसमें हमने इन सबसे बात की थी कि आपको सपने किस भाषा में आते हैं तो सबने कहा कि हिन्दुस्तानी में। इस बात से यह साबित होता है सबके सपनों का मालिक एक है। खुदा आपको रोज आकर सपनों में बताता है कि आप हिन्दुस्तानी हो। यह प्रयोग पूरी तरह सफल रहा था। अपने वक्तव्य में आगे उन्होंने कहा कि हम भारतीय/भारतीय मूल राष्ट्र के हैं, जिसका एक उदाहरण ऋषि सुनक हैं, जो हमारी भारतीय जड़ों की गवाही है वे इस बात का उदाहरण है कि हमारे वंश और परंपराएं जो हमारे पूर्वजों से ली गई हैं वे कभी मिटती नहीं है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि दुनिया के सभी धार्मिक ग्रंथ हमें दयालु होने का निर्देश देते हैं।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्था आयोग,भारत सरकार के सदस्य प्रो. शाहिद अख्तर ने कहा कि अल्पसंख्यक संस्थान देश में अच्छा काम कर रहे हैं और वे नेशन फर्स्ट की तर्ज पर चल रहे हैं। भारत की एक मिसाल यह है कि दुनिया में मुसलमानों के 72 फिरके हैं वे सभी हिन्दुस्तान में रहते हैं। हमें श्रेष्ठ भारत पर फर्क्र होना चाहिए । हमारी जड़ें एक हैं एवं हमारा डीएनए एक है।

कार्यक्रम के अध्यक्षीय उद्बोधन में जामिया हमदर्द विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो. मो. अफशार आलम ने कहा कि 31 अक्तूबर 2015 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने एक भारत श्रेष्ठ भारत की पहल की थी। एकता के बल पर ये देश बना है। जामिया हमदर्द भी अनेकता में एकता का विश्वास रखता है। 31 अक्तूबर 2020 को इसमें आत्म निर्भर भारत भी जुड़ गया है। पाकिस्तान में भी भारत के फेडरल सिस्टम की काफी तारीफ होती है।

कार्यक्रम का आरंभ दीप प्रज्वलन एवं पौधों को पानी दे करके पर्यावरण के प्रति जागरूकता के संदेश के साथ किया गया। कार्यक्रम की प्रस्तावना रखते हुए राष्ट्रीय सुरक्षा मंच के राष्ट्रीय संगठन मंत्री गोलोक बिहारी राय, ने कहा कि राष्ट्रीय सुरक्षा विषयों पर चर्चा और राष्ट्र के लिए हितकारी निर्णय को निकालने का काम राष्ट्रीय सुरक्षा मंच विगत सात आठ सालों से कर रहा है। यह निर्णय सरकार और सिस्टम के लिए लाभदायक है। आगे के 25 सालों में हम कैसे चले इसके लिए 75 वें वर्ष में एक भारत श्रेष्ठ भारत आत्म निर्भर भारत की बात कर रहे हैं। अपने वक्तव्य में उन्होंने स्वामी विवेकानन्द के आलेख का उदाहरण देते हुए कहा कि यदि भारत मर गया तो विश्व मर जायेगा। ये बात अभी दो साल पहले कोरोना काल में प्रासंगिक हो गई जब बाकी के देश दवाओं के नाम पर बिजनेस की बात कर रहे थे तब विश्व के तीन चौथाई देशों को भारत ने निशुल्क दवाएं भेजे रहा था।

> "वतन से मोहब्बत आधा ईमान है : डॉ. इंद्रेश कुमार

> "आत्मनिर्भर भारत की प्रयोगशाला बनेगा जामिया हमदर्द विश्वविद्यालय : कुलपति आलम

राजनीतिक तरकस
देश का सबसे तेज साप्ताहिक
राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार
वर्ष : 01 , अंक : 07, नई दिल्ली, बुधवार, 09 नवम्बर , 2022

पराली और पटाखा ही प्रदूषण के कारक या बेतहाशा यातायात ?

निर्मल रानी

भारत का सबसे प्रमुख पर्व दीपावली एक बार फिर जहाँ भारतीय अर्थ व्यवस्था तथा व्यवसाय को गति प्रदान कर गया वहीं इस बार भी इस पावन पर्व के दौरान पटाखा और इससे उत्पन्न होने वाले प्रदूषण की चर्चा जोरों पर रही। देश की सर्वोच्च अदालत से लेकर विभिन्न राज्य सरकारों व प्रदूषण नियंत्रण संबंधी संस्थानों तक ने इस विषय पर अपने अपने नजरिये से संज्ञान लिया। दिल्ली के प्रदूषण पर नजर रखने व इसके नियंत्रण की जिम्मेदारी संभालने वाली सबसे बड़ी संस्था दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति ने इसी वर्ष गत सितंबर माह के मध्य में ही दीपावली के मद्दे नजर एक लिखित आदेश जारी किया। इस आदेश में साफ कहा गया था कि 'एक जनवरी, 2023 तक सभी प्रकार के पटाखों के निर्माण, भंडारण, बिक्री,आनलाइन शॉपिंग तथा सभी प्रकार के पटाखे फोड़ने पर पूर्ण प्रतिबंध रहेगा। दिल्ली सरकार के आदेशानुसार दिल्ली में आतिशबाजी की बिक्री और भंडारण पर पूरी तरह से रोक लगाई गई है और आदेश का उल्लंघन करने वालों पर 5 हजार रुपये जुमार्ना और 3 साल की जेल की सजा का भी प्रावधान किया गया था। दिल्ली सरकार ने गत वर्ष भी 1 जनवरी 2022 तक आतिशबाजी पर इसी तरह के प्रतिबंध की घोषणा की थी। इसके साथ ही आतिशबाजी की बिक्री और उपयोग के विरुद्ध एक कठोर अभियान भी चलाया गया था। उत्तर भारत के विभिन्न इलाकों विशेषकर राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में अक्टूबर माह से ही वायु प्रदूषण का लगातार बढ़ना शुरू हो जाता है और यह प्रदूषण फरवरी व मार्च तक रहता है।

सरकार के इस आदेश के विरुद्ध जब दिल्ली के कुछ बड़े आतिशबाजी व्यवसायियों ने अपने व्यवसाय व आजीविका का वास्ता देते हुये सर्वोच्च न्यायलय का दरवाजा खटखटाया तो सर्वोच्च न्यायलय ने भी आतिशबाजी पर प्रतिबंध के विरुद्ध दायर याचिका पर तुरंत (दीपावली पूर्व) सुनवाई करने से इस टिप्पणी के साथ इनकार कर दिया कि 'लोगों को साफ हवा में सांस लेने दीजिए' मिठाई पर खर्च करिए। इससे पूर्व दिल्ली हाईकोर्ट भी दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा राजधानी में आतिशबाजी की बिक्री और रखने पर पूरी तरह प्रतिबंध लगाने के निर्णय के विरुद्ध दायर याचिका पर सुनवाई करने से इनकार कर चुका है। हाईकोर्ट ने कहा कि ये मामला सुप्रीम कोर्ट के विचाराधीन है और वो सुनवाई नहीं कर सकते हैं। गोया अदालतें भी नहीं चाहतीं कि देश में दीपावली का त्यौहार प्रदूषण फैलाने का कारण बने। परंतु अनेक अदालती व शासनिक प्रतिबंधों के बावजूद दिल्ली सहित पूरे देश में दीपावली पर आतिशबाजियाँ जलाई गयीं। हां सरकारी आदेश का असर राजधानी दिल्ली में इतना जरूर हुआ कि यहाँ इस बार पिछले वर्षों की तुलना में लगभग 30 प्रतिशत कम आतिशबाजी जलाई गयी।

दीपावली में आतिशबाजी पर प्रतिबंध की कोशिशों व इसपर दिये जाने वाले 'प्रवचनों' के अतिरिक्त अदालत,सरकार व प्रशासन के निशाने पर किसानों द्वारा फसल की कटाई के बाद अपने अपने खेतों में जलाई जाने वाली पराली रहा करती है। आरोप लगता है कि दिल्ली में बढ़ते प्रदूषण का कारण जहां दीपावली में जलने वाली आतिशबाजी होती है वहीँ इससे भी बड़ा कारण खासकर पंजाब व हरियाणा में

"दरअसल सरकार ऐसे कई विषयों पर भ्रमित नजर आती है। एक ओर तो कारपोरेट के हितों की चिंता, राजस्व की प्राप्ति की लालच तो दूसरी ओर बढ़ती गलोबल वार्मिंग के चलते प्रदूषण नियंत्रण हेतु पड़ने वाले अंतर्राष्ट्रीय दबाव। इन हालात में सरकार को सबसे 'साफ़्ट टारगेट' असंगठित आम जनता ही नजर आती है या फिर देश का अन्नदाता किसान। जिनको समय समय पर सरकार प्रदूषण का जिम्मेदार ठहराती रहती है। जबकि हकीकत में पराली-पटाखा ही प्रदूषण के मुख्य कारक नहीं बल्कि हर वक़्त का बेतहाशा यातायात इसका सबसे बड़ा कारण है।

पराली फूंकने को बताया जाता है। परन्तु इस विषय पर शोध कताओं व अनेक विशेषज्ञों का मानना है कि पराली या आतिशबाजी के चलते वर्ष भर में मात्र चंद दिनों तक फैलने वाले प्रदूषण से सैकड़ों गुना अधिक प्रदूषण प्रतिदिन लाखों की संख्या में बढ़ते हुये वाहन, औद्योगिक इकाइयों से निरंतर उगलने वाला जहरीला धुंआ,दिल्ली में प्रतिदिन उड़ने वाली हजारों राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय उड़ानों से निकलने वाला अति जहरीला धुंआ तथा निर्माण कार्यों के चलते उड़ने वाली धूल-मिट्टी-गुबार आदि प्रदूषण के बड़े कारक हैं। परन्तु सरकार या प्रशासन इन विषयों पर चर्चा करने के बजाये बार दीपावली के प्रदूषण व किसानों की पराली पर ही उंगली उठाता है। जबकि भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली भी अपनी एक रिपोर्ट में स्पष्ट कर चुका है कि दिल्ली में प्रत्येक वर्ष होने वाली स्मॉग का कारण दीपावली की आतिशबाजियाँ नहीं हैं।

कभी दिल्ली, चंडीगढ़ जैसे किसी भी महानगर के यातायात पर गौर से नजर डालिये। आप देखेंगे कि इनमें लगभग 80 प्रतिशत या शायद इससे भी अधिक कारें ऐसे होती हैं जिनमें कार मालिक अकेले ही सवार रहते हैं। ऐसी लाखों करें केवल एक एक व्यक्ति को ढोने के लिये रोजाना सुबह शाम न केवल पूरे वर्ष प्रदूषण फैलाती हैं बल्कि इनकी बड़ी संख्या के चलते ट्रैफिक जाम की स्थिति भी अक्सर बनी रहती है। और जाम की स्थिति में प्रदूषण और भी बढ़ जाता है। परन्तु इस पर कभी चर्चा शायद इसीलिये नहीं होती कि जहां संभ्रांत व अमीर तबका कारों का इस्तेमाल अधिक करता है वहीं कार कंपनियों द्वारा कारों की बिक्री किये जाने से भी यह विषय जुड़ा हुआ है। विमान भी कापोर्रेट्स द्वारा संचालित होने के साथ साथ बड़े लोगों की सवारी है लिहाजा सरकार की नजरों में यह भी प्रदूषण नहीं शायद 'ऑक्सीजन ' ही छोड़ता हो। और यदि यह मान भी लिया जाये कि आतिशबाजियाँ ही प्रदूषण फैलाने की सबसे बड़ी जिम्मेदार हैं तो केवल दीपावली की ही आतिशबाजी क्यों? नव वर्ष ,शादी ब्याह,दशहरा जैसे अनेक अवसरों व त्योहारों पर जलने वाली आतिशबाजी पर प्रतिबंध क्यों नहीं? और इससे भी बड़ी बात यह कि यदि पर्यावरण व स्वच्छ वातावरण की सबसे बड़ी दुश्मन आतिशबाजी ही हैं तो इनके उत्पादन पर प्रतिबंध क्यों नहीं? इनके निर्माण,बिक्री व एजेंसी,विक्रय केंद्र आदि के लिये लाइसेंस जारी करने का क्या औचित्य? यह तो वैसा ही है कि पॉलीथिन का उत्पादन भी होगा और बिक्री भी परन्तु यदि किसी उपभोक्ता के हाथों में पॉलीथिन बैग नजर आया तो उसपर जुर्माना? दरअसल सरकार ऐसे कई विषयों पर भ्रमित नजर आती है। एक ओर तो कारपोरेट के हितों की चिंता, राजस्व की प्राप्ति की लालच तो दूसरी ओर बढ़ती गलोबल वार्मिंग के चलते प्रदूषण नियंत्रण हेतु पड़ने वाले अंतर्राष्ट्रीय दबाव। इन हालात में सरकार को सबसे 'साफ़्ट टारगेट' असंगठित आम जनता ही नजर आती है या फिर देश का अन्नदाता किसान। जिनको समय समय पर सरकार प्रदूषण का जिम्मेदार ठहराती रहती है। जबकि हकीकत में पराली और पटाखा ही प्रदूषण के मुख्य कारक नहीं बल्कि हर वक़्त का बेतहाशा यातायात इसका सबसे बड़ा कारण है।

यूनिफॉर्म सिविल कोड लाएगी भाजपा

हिमाचल में सत्ता परिवर्तन का रिवाज इस बार बदलने का नारा देने वाली भाजपा ने अपने चुनावी घोषणापत्र में बड़ा दांव खेला है। भाजपा ने एक तरफ 27 लाख महिला मतदाताओं को ध्यान में रखते हुए उनके लिए बड़ी घोषणाएं की हैं, वहीं यूनिफॉर्म सिविल कोड और वक्फ प्रॉपर्टीज के सर्वे का ऐलान कर अपने स्टैंड को भी क्लीयर कर दिया है। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सौदान सिंह इत्यादि की उपस्थिति में शिमला के होटल पीटरहॉफ से संकल्प पत्र को जारी किया गया। मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस ने अपने प्रतिज्ञा पत्र में 10 गारंटियों का ऐलान किया था, भाजपा ने इससे एक कदम आगे जाते हुए 11 वादे मतदाताओं से किए हैं। नई बात यह है कि महिलाओं के लिए 11 बिंदु अलग से घोषित किए गए हैं। पार्टी का संकल्प पत्र ओल्ड पेंशन को लेकर साइलेंट है, लेकिन कर्मचारियों के बहुत से मामले इसमें आ गए हैं।

सरकारी कर्मचारियों की वेतन विसंगतियों को दूर करने के साथ महिला कर्मचारियों को 365 दिन की चाइल्ड केयर लीव देने और सभी सरकारी कर्मचारियों तथा पेंशनरों को कैशलेस मेडिकल सुविधा के लिए 50 करोड़ का कोष बनाने का वादा इसमें शामिल किया गया है। महंगाई भत्ते को 78 फीसदी करने के साथ ट्राइबल और दूरदराज के क्षेत्रों में भत्ते बढ़ाने का ऐलान भी है। भाजपा ने अब हिमाचल में या तो अपना वेतन आयोग बनाने का ऐलान किया है या फिर केंद्रीय वेतन आयोग से ही इस राज्य को जोड़ा जाएगा। भाजपा के विजन डाक्यूमेंट में 11 मुख्य संकल्प हैं। हालांकि पुरानी पेंशन प्रणाली इस डॉक्यूमेंट में नहीं है। हालांकि इस बारे में सवाल पर हिमाचल भाजपा के पूर्व प्रभारी मंगल पांडे ने जरूर कहा कि पहले से गठित कमेटी की सिफारिशों के अनुसार इसे हल करेंगे। इससे ज्यादा राष्ट्रीय अध्यक्ष या मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर ने ओल्ड पेंशन पर कुछ नहीं कहा। दृष्टिपत्र में भाजपा ने हिमाचल प्रदेश में यूनिफोर्म सिविल कोड लागू करने की घोषणा की है।

इसके अलावा आठ लाख रोजगार के अवसर सृजित करने की बात भी कही गई हैं। इसके अलावा महिलाओं के लिए भी 11 बड़ी घोषणाएं की गई हैं। इसे स्त्री शक्ति संकल्प का नाम दिया गया हैं। इसमें शगुन योजना के तहत बीपीएल लड़कियों की शादी पर मिलने वाली राशि को 31 हजार रुपए से 51 हजार किया जाएगा। सरकारी नौकरियों में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण देने का दावा भी भाजपा ने दृष्टि पत्र में किया हैं। स्कूल जाने वाली छात्राओं को साइकिल और कालेज जाने वाली छात्राओं को स्कूटी देने का वादा भी है। भाजपा ने अपने संकल्प पत्र में सरकार बनने पर मुख्यमंत्री कार्यालय में हिमाचल इन्फ्रास्ट्रक्चर वार रूम और हिमाचल की सबसे महत्त्वपूर्ण विकासात्मक चुनौतियों को हल करने के लिए 102 युवा उत्साही पेशेवरों के लिए मुख्यमंत्री फेलोशिप कार्यक्रम की शुरुआत करने का ऐलान किया है। इसमें 50000 रुपए प्रतिमाह दिए जाएंगे। भाजपा ने जनप्रतिनिधियों तक पहुंच में सुधार करने के लिए विधायक हेल्पलाइन शुरू करने का भी वादा किया है। किसान कल्याण बोर्ड की स्थापना और ऐसी पंचायतों को पुरस्कृत करने का ऐलान किया गया है, जो कचरा प्रबंधन, स्वच्छता और स्वास्थ्य के मामले में अच्छा काम करें। उत्तम पशु पुरस्कार योजना के तहत स्वदेशी भारतीय मवेशी को दिए जाने वाले वित्तीय प्रोत्साहन को बढ़ाया जाएगा।

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक जितेंद्र तिवारी द्वारा इंप्रेशन प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18/19/20, सी ब्लॉक, सेक्टर 59, नोएडा, उ.प्र.-201301 से मुद्रित तथा ई632/7 सी संगम विहार साउथ दिल्ली -110080 से प्रकाशित। प्रकाशित लेखों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा। प्रधान संपादक : **जितेंद्र तिवारी** प्रबंध संपादक :**राजेश तिवारी**
RNI NO.: DELHIN/2016/70363 Email:tarkasnews@gmail.com Mob:9990170069 Website: www.rajneetiktarkas.in

राजनीतिक तरकस
देश का सबसे तेज साप्ताहिक
राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार
वर्ष : 01 , अंक : 07, नई दिल्ली, बुधवार, 09 नवम्बर , 2022

पीएम मोदी ने झुग्गी वासियों को सौंपे फ्लैट

बोले- भेदभाव में समग्र विकास की कल्पना बेमानी

दिल्ली ब्यूरो
Rajneetiktarkas.in

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने झुग्गी-झोपड़ी वासियों के पुनर्वास के लिए दिल्ली के कालकाजी में यथास्थान झुग्गी-झोपड़ी पुनर्वास परियोजना के अंतर्गत बनाए गए 3024 नवनिर्मित ईडब्ल्यूएस फ्लैटों का उद्घाटन किया। उन्होंने दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित एक कार्यक्रम में लाभार्थियों को फ्लैटों की चाबियां सौंपी। इसके साथ ही पीएम ने फ्लैट पाने वालों से आग्रह किया कि वे सफाई का खास ख्याल रखें। उन्होंने विभिन्न टावरों के बीच इसको लेकर प्रतियोगिता करने का सुझाव दिया।

इसके साथ ही उन्होंने लोगों से पानी और बिजली बचाने की अपील की।

हजारों गरीबों के लिए आज है जीवन की नई शुरुआत

नरेंद्र मोदी ने कहा कि विज्ञान भवन में बहुत कार्यक्रम होते हैं। कोट-पैंट और टाई वाले बहुत लोग यहां आते हैं, लेकिन आज जिस तरह से हमारे परिवार के लोगों का उत्साह दिख रहा है ऐसा कम ही देखने को मिलता है। आज दिल्ली के सैकड़ों परिवारों के लिए, हजारों गरीब भाई-बहनों के लिए बहुत बड़ा दिन है। वर्षों से जो परिवार दिल्ली की झुग्गियों में रह रहे थे आज उनके लिए एक प्रकार से जीवन की नई शुरुआत हुई है। उन्होंने कहा कि आज यहां सैकड़ों लाभार्थियों को उनके घर की चाबी मिली है। मुझे चार-पांच परिवारों से मिलने का मौका मिला है। मैं देख रहा था कि उनके चेहरे पर खुशी और संतोष के भाव थे। अकेले कालकाजी एक्सटेंशन के फर्स्ट फेज में ही तीन हजार से ज्यादा घर तैयार कर लिए गए हैं। बहुत ही जल्द यहां रह रहे दूसरे परिवारों को भी गृह प्रवेश का मौका मिलेगा। मुझे विश्वास है आने वाले समय में भारत सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयास दिल्ली को एक आदर्श शहर बनाने में बड़ी भूमिका निभाएंगे।

गरीबी-अमीरी के बीच की खायी पाटना है

नरेंद्र मोदी ने कहा कि दिल्ली जैसे बड़े शहरों में हम जो विकास देखते हैं, बड़े सपने और जो ऊंचाइयां देखते हैं उनकी नींव में मेरे इन गरीब भाई-बहनों की मेहनत है। दुर्भाग्य देखिए, सच्चाई यह भी है कि शहरों के विकास में जिन गरीबों का खून पसीना लगता है वो उसी शहर में बदहाली का जीवन जीने को मजबूर होते हैं। जब निर्माण कार्य करने वाला ही पीछे रह जाता है तो निर्माण भी अधूरा ही रह जाता है। इसलिए बीते 7 दशकों में हमारे शहर समग्र विकास से वंचित रह गए। जिस शहर में एक ओर ऊंची-ऊंची भव्य इमारतें होती है, चमक-दमक होती है, उसी के बगल में झुग्गी-झोपड़ियों में बदहाली दिखाई देती है। आजादी के अमृतकाल में हमें इस खायी को पाटना होगा।

देश में है गरीब की सरकार

पीएम ने कहा कि दशकों तक देश में जो व्यवस्था रही, उसमें यह सोच बन गई थी कि गरीबी केवल गरीब की समस्या है। आज देश में जो सरकार है गरीब की सरकार है, इसलिए वो गरीब को अपने हाल पर नहीं छोड़ सकती है। आज देश के नीतियों के केंद्र में गरीब है। आज देश के निर्णयों के केंद्र में गरीब है। दिल्ली में 50 लाख से ज्यादा लोग ऐसे थे, जिनके पास बैंक खाता नहीं था। ये लोग भारत की बैंकिंग व्यवस्था से नहीं जुड़े थे। गरीब बैंक के दरवाजे तक जाने से डरता था। ये लोग दिल्ली में थे, लेकिन दिल्ली इनके लिए बहुत दूर था। इसी स्थिति को हमारी सरकार ने बदला। अभियान चलाकर दिल्ली और देश के गरीबों के बैंक खाते खुलवाए गए। आज दिल्ली के गरीब को भी सरकार की योजनाओं का सीधा लाभ मिल रहा है। हमने वन नेशन वन राशन की व्यवस्था कर दिल्ली के लाखों गरीबों का जीवन आसान बनाया है।

अनधिकृत कॉलोनियों के घर हो रहे नियमित

नरेंद्र मोदी ने कहा कि दिल्ली में दशकों पहले बनी अनधिकृत कॉलोनियों की समस्या रही है। इन कॉलोनियों में लाखों लोग रहते हैं। उनका पूरा जीवन इस चिंता में बीत रहा था कि उनके घरों का क्या होगा। दिल्ली के लोगों की इस चिंता कम करने का काम केंद्र सरकार ने किया। पीएम उदय योजना से दिल्ली के अनअधिकृत कॉलोनियों में बने घरों को नियमित करने का काम चल रहा है। अब तक हजारों लोग इस योजना का लाभ उठा चुके हैं। केंद्र सरकार ने दिल्ली के मध्यम वर्ग के लोगों को भी उनके घर का सपना साकार करने में बहुत मदद दी है। दिल्ली के निम्न एवं मध्यम वर्ग के लोग अपना घर बना पाएं इसके लिए उन्हें केंद्र सरकार की तरफ से ब्याज में सबसिडी दी गई है। इसपर भी केंद्र सरकार के तरफ से 700 करोड़ रुपए से अधिक खर्च किए गए हैं। केंद्र सरकार का लक्ष्य है कि हम दिल्ली को देश की राजधानी के अनुरूप एक शानदार सुविधा संपन्न शहर बनाएं।

पानी और बिजली बचाना है जरूरी

पीएम ने कहा कि आज मेरे इतने सारे भाई बहन जीवन में एक नई शुरुआत करने जा रहे हैं तो मैं उनसे जरूर कुछ अपेक्षाएं रखता हूं। भारत सरकार करोड़ों की संख्या में गरीबों के लिए घर बना रही है। घर में नल से जल दे रही है। बिजली का कनेक्शन दे रही है। इन सुविधाओं को बीच हमें एक बात पक्की करनी है कि हम अपने घर में स्श्रेष्ठ बल्ब का ही उपयोग करेंगे। दूसरी बात हम किसी भी हालत में कॉलोनी में पानी बर्बाद नहीं होने देंगे। कुछ लोग बाथरूम में बाल्टी उल्टी रख देते हैं और नल चालू रखते हैं। सुबह छह बजे पानी आने पर वह घंटी का काम करता है। पानी बचाना बहुत जरूरी है। बिजली बचाना बहुत जरूरी है।

राजनीतिक तरकस
देश का सबसे तेज साप्ताहिक
राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार
वर्ष : 01 , अंक : 07, नई दिल्ली, बुधवार, 09 नवम्बर , 2022

ब्राह्मण महासभा का राष्ट्रीय अधिवेशन

दिल्ली ब्यूरो
Rajneetiktarkas.in

कांस्टिट्यूशन क्लब में सर्व ब्राहम्ण महासभा एवं ब्राह्मण शिरोमणि सम्मान का 17 वां राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न हुआ जिसमें संपूर्ण भारत से समाज के महान विभूतियों ने भाग लिया। यह सम्मेलन पूर्ण रूप से गैर राजनीतिक था जिसमें ब्राहमण समाज के उत्थान और उनकी समाज में योगदान पर विशेष रूप से चर्चा की गई। कार्यक्रम का शुभारंभ ब्राहमणों के ईष्ट देवता भगवान परशुराम की वंदना से हुई। उसके बाद प्रस्तोता ने ब्राहमण समाज पर एक लोमहर्षक कविता से पूरे कार्यक्रम की रूपरेखा खींचकर उपस्थित दर्शकों का मन मोह लिया। इस कविता का सार था कि कैसे विप्रों ने समाज और देश का आदिकाल से मान बढाया है और खुद पीड़ा सहते हुए समाज की आसन्न समस्याओं का बड़ी शिद्दत से समाधान किया है क्योंकि सेवा को ब्राहमणों ने अपनी इबादत समझी है। कार्यक्रम के आगाज में ही वक्ताओं ने अपने राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुरेश मिश्रा को सर्व ब्राहमण महासभा की संस्थापना के लिए उठाए गए कदम की भूरि भूरि प्रशंसा की। मंच पर विशेष अतिथितियों और ब्राहमण महासभा के पदाधिकारियों को आसीन कर मंच का नेतृत्व जाने माने वक्ता और विद्वान आचार्य राजेश्वर ने किया। उनकी प्रखर वाणी ने श्रोताओं को मंत्रमुगध कर दिया। उन्होंने सर्व ब्राहमण महासभा की स्थापना और इसकी अबतक की सफल यात्रा का सजीव चित्रण करते हुए यह बताया कि यह कोई आसान काम नहीं था। इसके लिए सुरेश मिश्रा ने अपने चंद साथियों के साथ कई मुश्किलें झेली हैं। यहां तक कि उन्हें अपने साथियों के साथ जेल भी जाना पड़ा। लेकिन उन्होंने अनवरत काम किया और आज देश में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में ब्राहमणों को गौरावन्वित किया है। आचार्य राजेश्वर ने यह भी बताया कि राजधानी दिल्ली में ब्राहमण समाज की विभिन्न क्षेत्रों में काम कर रहे विभूतियों का सम्मानित करने का यह 17 वां साल है। ब्राहमण समाज के इन प्रतिभाओं को ब्राहमण रत्न और ब्राहमण गौरव जैसे अलंकारों से विभूषित कर सर्व ब्राहमण महासभा ने अपने राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेश मिश्रा के नेतृत्व में उनका और अपना मान बढ़ाया है। विगत सत्रह ससलों में अबतक ब्राहमण समाज के लगभग 400 विभूतियों को इस महासभा ने सम्मानित कर उनका मार्गदर्शन किया है। महासभा का इतिहास बताते हुए आचार्य ने कहा कि इसकी स्थापना सन 1989 में की गई।

एच सी गणेशिया

ब्राहमणों के धर्म और कर्म की चर्चा करते हुए सुप्रीम कोर्ट के **सुप्रसिद्ध वकील एच सी गणेशिया** ने ब्राहमण समाज की विस्तृत चर्चा करते हुए यह बताया कि वैदिक काल से ही ब्राहमण समाज पूरे विश्व में धर्म, साहित्य, अध्यात्म, के साथ साथ युद्ध कौशल में भी प्रवीण रहे हैं क्योंकि ब्राहमणों ने वसुधैव कुटुंबकम के सिद्धांत पर अपना जीवन बिताया है। समय समय पर उन्होंने अपना अध्यात्मिक प्रतिरोध भी जताया है जिसे विशेष राजकाल में पूरे सम्मान के साथ देखा गया है। श्री गणेशिया ने अपनी बातों से इस बात पर रौशनी डाली कि इस महाअधिवेशन के जरिए हम ब्राह्मणों को उनकी कर्तव्यनिष्ठा और उच्चकोटि की सोच का बोध कराना है। उनका यह कहना था कि हम सभी एक विशेष राजधर्म परंपरा से जुडे हैं जिसका पालन हर युग में हर हाल में होना चाहिए। उन्होंने कई उदाहरण पेश करते हुए कहा कि वेदों में भी यह लिखा है कि हमें अपना अंतःकरण शुद्व करना है क्योंकि जो भीतर से अपने इंद्रियों को वश में कर सकता है वही ब्राहमण है और किसी भी अंर्तविरोध का सामना बखूबी कर सकता है। उन्होंने बताया कि जाति विशेष से कोई महान नहीं बन सकता है यह तो हमारे कर्म तय करते हैं कि किसके हृदय में जनकल्याण की कितनी भावना है।

सुरेश मिश्रा

कार्यक्रम में अपना स्वागत न करने का आग्रह करते हुए सर्व **ब्राहम्ण महासभा के राष्टीय अध्यक्ष पंडित सुरेश मिश्रा** ने महासभा के विगत कार्यों व आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने अपने एक वीडियो के जरिए सभा के लोगों से अपील किया कि छात्र हमारे लिए प्रथम स्थान रखते हैं। उनकी शिक्षा में कोई व्यवधान न आए इसलिए उनकी फीस व अन्य आर्थिक मदद जारी रहनी चाहिए। उन्होंने इस बात का जिक्र किया कि महासभा पिछ्ले कई वर्षों से सामूहिक विवाह का आयोजन करती आई है जिसमें बड़ी संख्या में लोगो की भगीदारी रहती है। आर्थिक मदद देकर संस्था ने कई गरीब परिवारों की मदद करने में अपनी सक्रियता दिखाई है। साथ 3000 से अधिक बच्चों को स्कालरशिप देकर उनका उत्साहवर्द्धन किया है। उन्होंने बेबाकी से अपने टीम के सदस्यों से आग्रह किया कि कभी आवयकता पडी तो किसी बच्चे की फीस के लिए उनका टेलीफोन किसी को भी जा सकता है। उन्होंने आरक्षण के मुद्दे पर विशेष रौशनी डालते हुए कहा कि आर्थिक रूप से पिछडे हुए समाज के लोगों के लिए यह 14 फीसदी का आरक्षण संसद में पारित हो जाए तो हमारा मिशन पूरा हो जाएगा।

इसके बाद स्वागत का सिलसिला शुरू हुआ जिसमें महासभा के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं सुरेश मिश्रा, राकेश के शुक्ला, एच सी गणेशिया ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्रीमद् 1008 श्री निरंजन पीठाधीश स्वामी कैलाशानंद गिरि महाराज का शाल व फूलमालाओं से स्वागत किया। उनके स्वागत में बोलते हुए **सर्व ब्राहमण महासभा के राष्टीय संयोजक राकेश के शुक्ला** ने कहा कि स्वामी जी कई वर्षों से हमारी संस्था को अपना आर्शीवाद देते आए हैं और दिल्ली में आयोजित सभी सम्मान समारोह में पहुंचकर हमें सम्मानित करते आए हैं। उन्होंने अपने कुंभ दर्शन के दौर का जिक्र करते हुए कहा कि स्वामी जी का सान्निध्य में उन्हें बहुत कुछ सीखने का मौका मिला। उन्होंने अपना अनुभव साझा करते हुए कहा कि कुंभ दरअसल एक एकता परिचायक है। हमारे सनातन धर्म की पहचान है। उन्होंने कुंभ को विराट से मिलाने का एक यज्ञ बताया। मोक्ष का माध्यम है। समुचे सृष्टि का जयघोष है। उन्होंने बडी ही खूबसूरती ब्राहमणों के दायित्व का बोध कराते हुए कहा कि हम ईश्वर ने इतनी क्षमता दी है कि हम शास्त्र और शस्त्र में भेद कर सकें। इसे कब उठाना है और किसके लिए प्रयोग में लाना है इसका भान जरूरी है। सर्व ब्राहमण महासभा के भविष्य की योजनाओं की चर्च करते हुए राकेश शुक्ला ने कहा कि हमारी टभ्म ने यह फैसला लिया है कि योगिया वस्त्र पहनने के नियमों का कडाई से पालन करना पडेगा। इसे मात्र संयास से जोडकर नहीं देखा जाना चाहिए। ज्योतिष, योग और संयास की व्यापक व्याख्या होनी चाहिए, जिसके लिए ब्राहमण महासभा शीघ्र ही अपने कोर कमेटी में इसका फैसला लेगी। एक चाणक्य सेना का गठन भी शीघ्र किया जाएगा जिसमें 30 वर्ष से कम आयु के बच्चे शामिल हो सकेंगे। इस चाणक्य सेना का उद्देश्य पूरी तरह से धर्म अनुकूल होगा और सिर्फ अन्याय के खिलाफ इनकी आवाज बुलंद होगी। श्री शुक्ला ने वैदिक परंपराओं की व्यवहारिक बातों के पालन पर बल दिया। पर्यावरण पर अपनी चिंता जताते हुए उन्होंने कहा कि हमारी कोर कमेटी शीघ्र ही पर्यावरण बचाओ की नीतिओं पर अपना स्टैंड बताएगी और भविष्य की कार्ययोजनाओं में इसे भी शामिल किया जाएगा।

राकेश के शुक्ला

स्वामी कैलाशानंद

अपने अध्यक्षीय भाषण में **स्वामी कैलाशानंद सरस्वती महाराज** ने बडी ही साधारण शब्दों में अपनी बात रखते हुए कहा कि वेद हमें जीवन की सीख देता है। इसे सभी को पढ़ना और समझना चाहिए। उन्होंने ब्राहमणों से कहा कि आप कभी भी उपेक्षित महसूस न करें। पहले भी और आज भी ब्राहमण प्रथम स्थान पर है। बस स्वयं के अस्तित्व को पहचानने की आवश्यकता है। गीता में भी यही लिखा है कि अपने कर्मों का पालन करते रहें आप स्वयं में श्रेष्ठ रहेंगे। स्वामी जी स्पष्ट करते हुए कहा कि वैसे तो महात्माओं की कोई जाति नहीं होती पर उन्होंने संदर्भ का उल्लेख करते हुए अपना परिचय पहली बार किसी सार्वजनिक मंच पर रखा। उन्होंने बताया कि उनका पूरा नाम कैलाश कुमार पांडेय है जिसे आज भगवान की कृपा से 23 लाख साधुओं का नेतृत्व प्राप्त है और वह इस अखाडे के सर्वोच्च पद पर आसीन होकर एक संयासी के तौर पर अपना कर्तव्य निभा रहे हैं। उनका स्पष्ट मानना था कि संयासी का देश और समाज के प्रति बहुत सारे कर्तव्य होते हैं। उन्होंने कृष्ण सुदामा और आदिशंकराचार्य का उदाहरण पेश करते हुए कहा कि भगवान पृथ्वी पर इसलिए अवतार लेते हैं ताकि मानव जाति में जीवन का आदर्श प्रस्तुत कर सकें। उन्होंने आहार, विहार और व्यवहार पर बल देते हुए कहा कि इन तीन चीजों का पालन कर आप अपने आपमें संतुष्ट रह सकते हैं। उन्होंने विवेकानंद की बात उपस्थित लोगों में पेश कर कहा कि जब यूएन में विवेकानंद से पूछा गया कि आप कितनी देर तक बोल सकते हैं तो उन्होंने कहा कि न्यूनतम मैं घंटों तक बोल सकता हूं और अधिकतम वर्षों तक बोल सकता हूं। तो यह होती है किसी की विद्वता की पराकाष्ठा। ज्ञान, मुक्ति और वैराग्य पर भी स्वामी जी बडी ही सरलता से अपन बात रखी। उन्होंने इन सबसे परे अभ्यास पर बल दिया। उनका कहना था कि सारे देवताओं ने अभ्यास और कर्म को श्रेष्ठ बताया है।

सुदीप तिवारी सचिव मेहंदीपुर बालाजी राजस्थान

सभा में मौजूद गणमान्य लोगों में प्रमुख थे रिटायर्ड आई ए एस ऑफिसर विश्वपति त्रिवेदी, रमा पांडेय,पूर्व मीडियाकर्मी बी बी सी, सुदीप तिवारी, शिक्षा सचिव, मेंहदीपुर बालाजी, जिन्होंने महासभा को बालाजी टस्ट की ओर से 11 लाख रूपये का चेक दिया, रवि शंकर पुजारी, सालासार बालाजी, दिनेश शर्मा, प्रदेश उपाध्यक्ष, महासभा, उत्तर प्रदेश से विधाष्क पांडे जी, वकील कमलेश शर्मा, अवधेश अवस्थी, पूर्व न्यायाधीश ज्ञानसुधा मिश्रा, जिन्होंने पूरे वक्त वक्ताओं सुना और अपना समर्थन जाहिर किया।

सम्मानित विभूतियों को सर्व ब्राहमण महासभा की ओर से उनकी समाज में उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए स्वयं स्वामी जी ने अपने हाथों से प्रदान किया। पुरस्कृत होने वाले कुछ उल्लेखनीय नाम इस प्रकार हैं-विश्वपति त्रिवेदी, ज्ञानसुधा मिश्रा, डाक्टर निशाकांत ओझा, अवध बिहारी कौशिक, गोपाल मिश्रा, विकास

शर्मा, नीलेश शुक्ला, मनीष त्रिपाठी, रवि शंकर तिवारी, रघुपति दास, अविनाश त्रिपाठी, राजीव दुबे, आर के शर्मा, राहुल शर्मा, प्रदीप शर्मा दत्तात्रेय, डॉक्टर बी के मिश्रा, प्राची शर्मा, नरेश शर्मा, आशीष तिवारी, अरूण शुक्ला। इस अवसर पर मनुस्मृति फिल्म का पोस्टर भी स्वामी जी के कर कमलों द्वारा उदघाटित किया गया।

राजनीतिक तरकस
देश का सबसे तेज साप्ताहिक
राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार
5
वर्ष वर्ष : 01 , अंक : 07, नई दिल्ली, बुधवार, 09 नवम्बर , 2022

केजरीवाल बनाएंगे गढ़ या बचाएंगे किला

अभय तिवारी
(वरिष्ठ पत्रकार)

गुजरात और हिमाचल प्रदेश में विधानसभा चुनाव के बीच दिल्ली में भी दंगल का ऐलान हो गया है। करीब डेढ़ दशक बाद अपने पिछले स्वरूप में लौटे दिल्ली नगर निगम की 250 सीटों के लिए मतदान 4 दिसंबर को होगा जबकि नामांकन प्रक्रिया 7 नवंबर से शुरू हो जाएगी। गुजरात और हिमाचल विधानसभा चुनाव के बीच दिल्ली नगर निगम के चुनाव की घोषणा ने पहले से ही गर्म चल रही दिल्ली की सियासत को और अधिक गर्म कर दिया है। यह भले ही स्थानीय चुनाव हो लेकिन इसका असर दिल्ली से सैकड़ों किलोमीटर दूर गुजरात और हिमाचल पर ही नहीं बल्कि पूरे देश की सियासत पर पड़ने वाला है।

2024 के आम चुनाव में भले ही अभी डेढ़ साल का वक्त बाकी है लेकिन सभी राजनीतिक दलों और उनके नेताओं ने मोदी के खिलाफ पेश बंदी काफी पहले से शुरू कर दी है। अलग-अलग राज्यों के विधानसभा चुनाव में यूं तो कई राजनीतिक दलों ने भाजपा को पटखनी दी है लेकिन जब मुकाबला केंद्रीय स्तर पर होता है तो इन दलों को भाजपा आसानी से पटखनी दे देती है। क्षेत्रीय दलों के सीमित पहुंच और कांग्रेस एवं वामपंथी जैसे राष्ट्रीय दलों के लगातार कमजोर होने के चलते मोदी के विरोधी खेमे को यह एहसास हो गया है की मोदी और भाजपा का अलग अलग होकर के मुकाबला करना आसान नहीं है इसलिए वह विपक्षी एकता की बात करने लगे हैं। मोदी के खिलाफ हो रही इस लामबंदी में सबसे बड़ी समस्या नेतृत्व की है। राज्य विधानसभा चुनाव में मोदी को पटखनी देने वाले क्षेत्रीय दल पुराने राष्ट्रीय दलों की अगुवाई में मैदान में उतरने को तैयार नहीं है। ऐसे में मोदी के खिलाफ चेहरा कौन होगा इस बात का दारोमदार बहुत हद तक इन तीन चुनाव के नतीजों पर निर्भर कर सकता है इसीलिए भी इसे दिल्ली में सत्ता का सेमीफाइनल भी कहा जा रहा है।

यह तीनों चुनाव अरविंद केजरीवाल के लिए भी किसी अग्निपरीक्षा से कम नहीं है क्योंकि केजरीवाल की अगुआई वाली पार्टी के लिए एक साथ तीन मोर्चे खुल गए हैं। इनमें से कम से कम दो पर तो दिल्ली के सीएम और 'आप' संयोजक ने पूरी ताकत लगा दी है। एक तरफ वह गुजरात में 37 साल से सत्ता में काबिज भारतीय जनता पार्टी को चुनौती दे रहे हैं तो दूसरी तरफ दिल्ली में भी पहली बार एमसीडी पर कब्जा करने की कोशिश है।

राजनीतिक जानकारों की मानें तो पिछले कुछ महीनों में केजरीवाल ने जिस तरह भाजपा के गढ़ में मेहनत की है उससे पार्टी को बेहतर नतीजे की उम्मीद है। केजरीवाल की रैलियों और रोड शो में उमड़ती भीड़ को देखते हुए पार्टी को कम से कम कांग्रेस से आगे निकल जाने की उम्मीद है। कहा जा रहा है कि यदि 'आप' ऐसा करने में सफल रहती है तो राष्ट्रीय स्तर पर पार्टी के विस्तार को मजबूती मिलेगी। पार्टी यह नैरेटिव बनाने में मदद मिलेगी कि 'आप' ही बीजेपी का विकल्प हो सकती है।

हालांकि, दिल्ली में भी एमसीडी चुनाव भी 'आप' के लिए बेहद अहम है। दिल्ली में ही जन्मी पार्टी पिछले तीन विधानसभा चुनाव में जीत हासिल कर चुकी है, लेकिन लोकसभा चुनाव और एमसीडी चुनाव में उसे निराशा हाथ लगती रही है। इस बार पार्टी 'एमसीडी में भी केजरीवाल' नारे के साथ भाजपा से नगर निगम की सत्ता छीनने की कोशिश में है। ऐसे में बड़ा सवाल यह है कि क्या गुजरात और दिल्ली में एमसीडी चुनाव के एक साथ होने से क्या केजरीवाल का ध्यान बंटेगा और क्या उन्हें किसी एक मोर्चे पर इसका कुछ नुकसान हो सकता है? हालांकि पार्टी सूत्रों का कहना है कि दोनों ही चुनावों में एक साथ अच्छे प्रदर्शन के लिए पूरी रूपरेखा तैयार है। अरविंद केजरीवाल, भगवंत मान, मनीष सिसोदिया, राघव चड्ढा जैसे नेताओं की अगुआई में कार्यकर्ता गुजरात के साथ एमसीडी चुनाव लड़ने को तैयार हैं।

आप जहां एक साथ दो मोर्चे पर जोर लगाएगी तो भाजपा के सामने एक साथ तीन फ्रंट खुले हुए हैं। हिमाचल में जहां पार्टी के सामने 37 साल का रिकॉर्ड तोड़ते हुए सत्ता दोहराने की चुनौती है तो गुजरात में 27 साल का लगातार शासन जारी रखने का लक्ष्य है। वहीं, दिल्ली एमसीडी में भी लंबे समय से काबिज भाजपा को 'सत्ता विरोधी लहर' से जूझना होगा। तीनों ही राज्यों में पार्टी का मुकाबला 'आप' और कांग्रेस से है। हालांकि, पार्टी को पीएम मोदी के चेहरे, बड़े काडर, आप और कांग्रेस में वोट बंटवारे जैसे फैक्टर्स के सहारे जीत की उम्मीद है।

भारत की भित्ति चित्र कला

डॉ गौरी श्रीवास्तव
(लेखिका)

भारत में भित्ति चित्र बनाने की कला सदियों से चली आ रही है। हम यह कह सकते हैं कि यह कला मानव जाति में पुरातन काल से चली आ रही है, जहाँ कि उन्होंने अपने अनुभवों और अहसासों को कुशलता पूर्वक भित्ति चित्रों के माध्यम से दीवारों पर उकेरा। परंपरागत रूप से इसमें प्रकृति से प्राप्त रंगों का ही प्रयोग किया जाता है और दीवारों पर चूने और प्लास्टर से पृष्ठभूमि तैयार की जाती है। जब प्लास्टर ताज़ा होता है तभी इस पर रंगों को लगाया जाता है ताकि रंग प्लास्टर में अंदर तक रच बस जायें। इस प्रकार बनाये गये भित्तिचित्र स्थायी होते हैं और सदियों तक इन्होने अपना अस्तित्व बनाये रखा है जबकि इनको पता नहीं कितनी प्रक्तिक और मानव निर्मित आपदाओं से गुज़ारना पड़ा है। अजन्ता और एलोरा में विद्यमान भित्तिचित्र इस बात का द्योतक हैं।

बदामी, बाघ और सित्तनवासल की गुफाओं में निर्मित भित्तिचित्र भी अति प्राचीन हैं। अजन्ता के भित्ति चित्रों को उल्लेखनीय बनाती हैं उसके पात्रों की सम्मोहक आखें। इसके पात्र हैं राजा, रानियाँ, देवता तथा दैवीय जन, जिनको कि अत्यन्त रमणीय और करुणामय रूप में चित्रित किया गया है। इनमें बौद्ध धर्म से सम्बन्धित जातक कथायें चित्रित हैं

अतः हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यह कला भारत में लगातार सदियों से विकसित होती आयी है जो कि चित्रकारों के कौशन, उनके रंगों की समझ और शास्त्रों के ज्ञान को प्रदर्शित करती हैं।

75वां वार्षिक विशाल संत समागम 16 से 22 नवंबर 2022 तक विविध कार्यक्रमों के साथ आयोजित किया जाएगा

राजनीतिक तरकस, हरियाणा ब्यूरो।

संत निरंकारी मंडल का 75वां वार्षिक विशाल संत समागम निरंकारी आध्यात्मिक कॉम्प्लेक्स जी टी रोड, समालखा में 16 से 22 नवंबर 2022 तक विविध कार्यक्रमों के साथ आयोजित किया जाएगा। सद्गुरु माता सुदीक्षा के सान्निध्य में समागम मानव कल्याण को समर्पित होगा, जिसमें निरंकारी मिशन की विश्वव्यापी चल रही गतिविधियों को लेकर प्रदर्शनि लगाई जाएंगी। समागम मे 16 को सेवादल की विशाल रैली की प्रस्तुति की जाएगी। 17 से लेकर 20 नवंबर तक विशाल धर्मसभा होगी।

21 नवंबर को विशाल शोभा यात्रा होगी व 22 नवंबर को गुरु वंदना का भव्य आयोजन होगा।

समागम में यातायात, खानपान, सुरक्षा, चिकित्सा वगैरह के व्यापक प्रबंध किए गए हैं। समागम में देश-विदेशों के लाखों श्रद्धालुओं के भाग लेने की संभावना है।

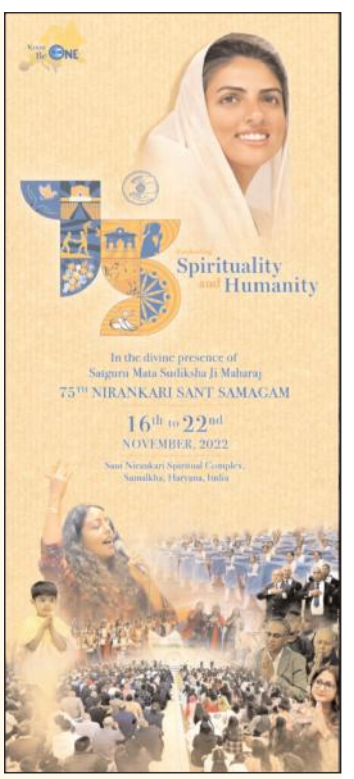

राजनीतिक तरकस
देश का सबसे तेज साप्ताहिक
राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार
वर्ष : 01, अंक : 07, नई दिल्ली, बुधवार, 09 नवम्बर, 2022

एलन मस्क की चिड़िया आजाद हुई या हाथी उड़ गया

ऋतुपर्ण दवे

बचपन में हममें से बहुतों ने चिड़िया उड़ का खेल खूब खेला है। इस चक्कर में चिड़िया भले ही न उड़ी हो लेकिन हाथी को जरूर उड़ा दिया। बड़ा मजेदार खेल था। लगभग इसी तर्ज पर मालिकाना हक बदलते ही ट्वीटर की चिड़िया के पर आसमान को छूने लगे हैं। दुनिया के सबसे प्रभावशाली सोशल मीडिया मंच ट्वीटर को पूरी स्वतंत्रता देने का दंभ भरने वाले ट्वीटर के नए मालिक एलन मस्क का ऐक्शन कितना कामियाब होगा कहना जल्दबाजी होगी। फिलहाल नए मालिक के आते हजारों नौकरियों पर खतरा मंडरा रहा है वहीं चिड़िया की आजादी की दुहाई बेमानी लगती है। जहां वो इंसानियत की मदद करने की बात कहते हैं वहीं दूसरी ओर ऐसे सार्वजनिक मंच की बात भी करते हैं जो मानव सभ्यता के लिए पूरी तरह से स्वतंत्र हो। उनकी सोच को लेकर भले ही विश्व से अलग-अलग प्रतिक्रियाएं आएं लेकिन भारत में काफी मायूसी जरूर होगी, होनी भी चाहिए। ये तो आने वाला वक्त बताएगा कि वो किस तरह से ट्वीटर के जरिए स्वतंत्रता की रक्षा कर पाते हैं। बहरहाल तमाम पेचीदगियों, कानूनी लड़ाई और बहुत मंहगी डील के बाद अब एलन मस्क बतौर मालिक अपना रौब दिखा रहे हैं।

ट्वीटर अमेरिका में ही पहले से खेमेबाजी में बंटा हुआ है। वहां के दक्षिणपंथी आरोप लगाते रहे हैं कि उनकी आवाज दबायी जाती रही। सबने देखा कि जनवरी 2021 में जिस तरह पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनॉल्ड ट्रम्प के ट्वीटर एकाउण्ट को हिंसा करने वाले उनके समर्थकों को क्रांतिकारी बताने तथा एक अन्य ट्वीट में बाइडेन के शपथ ग्रहण में नहीं जाने के ट्वीट पर कड़ा फैसला ले पहले लॉक किया फिर स्थायी रूप से बन्द कर दिया। ट्वीटर को लाभ के हिसाब से ट्रम्प बेहद फायदेमन्द थे और करीब 9 करोड़ फॉलोअर भी थे। 14 महीने बाद मई 2022 में एलन मस्क के एक बयान ने सबका ध्यान खींचा जिसमें कहा गया कि वो पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के ट्विटर अकाउंट के प्रतिबंध को हटाएंगे। उन्होंने ट्रंप के ट्विटर खाते बैन के फैसला नैतिक रूप से गलत बताया था। लेकिन जैसे ही मस्क के ट्वीटर को टेकओवर करने की बातें उजागर हुईं तो ट्रम्प की बधाई और उनके एकाउणाट को रिस्टोर करने के बयान ने भविष्य का रास्ता दिखाने का काम किया जिसमें साफ किया गया कि जो बातें हो रही हैं वो फर्जी है तथा डोनाल्ड ट्रंप की तरफ से एलन मस्क के ट्विटर को टेकओवर करने को लेकर कोई भी बयान जारी नहीं किया गया है। फैलाया जा रहा बयान फर्जी है।

27 अक्टूबर की जैसे ही ट्वीटर खरीदी समझौता पूरा होते ही एलन मस्क ने सबसे पहले इसके भारतीय मूल के सीईओ पराग अग्रवाल को बाहर कर दिया जो कि अभी साल भर भी कंपनी में नहीं रह पाए थे। वो बीते साल नवंबर में आए थे। सुना तो यहां तक जा रहा है कि ट्विटर के चीफ फाइनेंसियल नेड सीगल और भारतीय मूल के जनरल काउंसल विजया गाड़े को भी बर्खास्त कर दिया है। इसके पीछे चंद महीनों चली कानूनी जंग और मुकदमे बाजी भी है क्योंकि एलन मस्क जून में ट्वीटर पर स्पैम बॉट्स और फर्जी खातों की जानकारी छिपाने और विलय समझौते का उल्लंघन करने के गंभीर आरोप लगा डील से बाहर हो गए थे।

पूरा माजरा जानने के लिए ट्वीटर सौदे की प्रक्रिया को थोड़ा जानना होगा। इसी साल 4 अप्रेल को मस्क ने कहा था कि उनके पास ट्वीटर के 9 प्रतिशत शेयर हैं इसलिए वो सबसे बड़े शेयर होल्डर हैं। जब ट्वीटर ने बोर्ड ऑफ डायरेक्टर में शामिल होने का न्यौता दिया गया तो उन्होंने 9 अप्रेल को ठुकरा दिया। 13 अप्रेल को मस्क ने ट्वीटर के 54.2 प्रति शेयर खरीदने का पहला और अंतिम न्यौता दिया जो करीब 40 बिलियन डॉलर था। ट्वीटर इसे मान गया। लेकिन 13 मई को एलन मस्क ने डील यह कह रोक दी कि ट्वीटर में बहुत से फर्जी एकाउण्ट्स

"बचपन में हममें से बहुतों ने चिड़िया उड़ का खेल खूब खेला है। इस चक्कर में चिड़िया भले ही न उड़ी हो लेकिन हाथी को जरूर उड़ा दिया। बड़ा मजेदार खेल था। लगभग इसी तर्ज पर मालिकाना हक बदलते ही ट्वीटर की चिड़िया के पर आसमान को छूने लगे हैं। फिलहाल नए मालिक के आते हजारों नौकरियों पर खतरा मंडरा रहा है वहीं चिड़िया की आजादी की दुहाई बेमानी लगती है।

हैं और रोबोट्स भी फर्जी एकाउण्ट्स चलाते हैं। यह पूरी जानकारी उन्हें डील फाइनल होने से पहले दी जाए। जानकारी पराग अग्रवाल ने ट्वीटर पर ही एक लंबा थ्रेड जारी कर प्रदान करत हुए देते हुए सफाई भी दी कि फर्जी खातों को कम करने की दिशा में काम जारी है। पराग के जवाब का उन्होंने एक इमोजी के साथ मजाक उड़ाया और 8 जुलाई को जवाब दिया कि वो आगे इस डील को पूरी नहीं करेंगे क्योंकि उन्हें गलत व आधी-अधूरी जानकारी देकर गुमराह किया गया है। दोनों के मतभेदों की बातें कई बार सार्वजनिक हुईं। ट्वीटर पर ही कई तरह के तर्क-वितर्क और आपसी नोंकझोंक भी सामने आईं जो ट्वीटर पर ही खूब ट्रोल भी हुईं। तभी से यह लगने लगा था कि आते ही वो सबसे पहले पराग को ही बाहर का रास्ता दिखाएंगे जो कर दिया। 12 जुलाई को ट्वीटर ने अमेरिका के डेलावेयर कोर्ट में डील तोड़ने का मुकदमा दायर कर दिया था। इसके जवाब ने एलन मस्क ने 29 जुलाई 2022 को एक प्रतिदावा प्रस्तुत किया जिसमें ट्वीटर पर गलत जानकारी देने के तमाम प्रमाण प्रस्तुत किए। इसी बीच 13 सितंबर को 40 बिलियन की डील को शेयर होल्डर्स ने स्वीकरा जिसके बाद 3 अक्टूबर को मस्क ने पुरानी बातों को दरकिनार ट्वीटर खरीदने की बात साफ की और कोर्ट ने भी मान लिया। 26 अक्टूबर को हाथ में 'सिंक' लेकर ट्विटर के मुख्यालय पहुंचे थे जिसका वीडियो भी जारी किया और अपना ट्विटर-बायो भी बदल कर चीफ ट्वीट कर लिया। इस तरह 27 अक्टूबर को 44 बिलियन डॉलर का यह सौदा पूरा होते ही ट्वीटर की चिड़िया अपने नए मालिक एलन मस्क के हाथों में पहुंच गई।

अब विश्व पटल पर इस सबसे सशक्त सोशल मीडिया माध्यम को लेकर तमाम सवाल उठ रहे हैं जो वाजिब भी हैं। ट्वीटर में आगे किस-किस तरह के और कितने बदलाव होंगे? इस बारे में मस्क की एक चिट्ठी बेहद महत्वपूर्ण है जो उन्होंने अपने सारे विज्ञापन दाताओं और प्रदाताओं को लिख एक तरह से अपनी रणनीति, भूमिका व भविष्य का इशारा भी कर दिया। इसमें कहा गया है कि उनका वाद-विवाद का एक सामान्य टाउन स्क्वायर बनाने की उनकी मंशा है ताकि वाम व दक्षिण की जो धड़ेबाजी दिखती है जो नफरत फैला, लोगों को बांटने का काम करती है रोकेंगे ताकि किसी ध्रुवीकरण का हथियार ट्वीटर न बने। ट्वीटर को न्यूट्रल यानी गुटनिरपेक्ष माध्यम बनाएंगे। मस्क का साफ तौर कहना कि सोशल मीडिया से नफरत और बंटवारे का एक बड़ा खतरा होता जिसे वो बदलेंगे। उन्होंने दूसरे पारंपरिक सोशल मीडिया मंच पर भी उंगली उठाते हुए कहा कि यहां पर किसी एक पक्ष को ही महत्व मिलता है लेकिन वो ट्वीटर के साथ ऐसा नहीं करेंगे और पूरी तरह से निष्पक्ष रखेंगे। वो एक स्वस्थ व निष्पक्ष संवाद के पक्षधर हैं जो अब सोशल मीडिया पर कम हो गया है। ट्वीटर को खरीदने का अहम मकसद बताते हुए एलन मस्क यह बड़ी बात भी कहते हैं कि वो मानवता से बेहद प्यार करते हैं और इसे मदद करना चाहते हैं इसलिए ट्वीटर को लिया है। ट्वीटर पर नफरती बातों और जहर उगलने की हरकतों को बिल्कुल नहीं होने दिया जाएगा। दूसरी तरफ कहते हैं कि ट्वीटर पूरी तरह से आजाद नहीं होगा प्रतिबंधों के साथ चलेगा ताकि गलत अफवाहों का फैलाव न कर गर्मजोशी से भरा हो और सबका स्वागत करे।

एलेन मॉस्क की आदर्श सोच के बाद उन पर ही सवालिया निशान उठने स्वाभाविक है कि वो किस तरह से सबके लिए स्वतंत्र होने के बाद जांच और प्रतिबंध लगा पाएंगे? अफवाहों व झूठी खबरों पर कैसे काबू पाएंगे? एलन मस्क की कार्यप्रणाली या भविष्य के संकेतों से संदेह लाजिमी है। अब आगे ट्वीटर की चिड़िया कितनी आजाद होगी और वो खुले आसमान की कितनी ऊंचाइयों को छू पाएगी यह तो नहीं मालूम अगर मालूम है। हां मस्क के आते ही उन्होंने भारत सहित तमाम को बाहर का रास्ता दिखाकर भारत सहित दुनिया भर में एक नई बहस को जन्म जरूर दे दिया है। बस थोड़े इंतजार के बाद ही पता चल पाएगा कि न-न करते एलन मस्क की चिड़िया आजाद हुई या हाथी उड़ गया?

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार एवं स्तंभकार हैं।)

राजनीतिक तरकस
देश का सबसे तेज साप्ताहिक
राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार
7
वर्ष : 01 , अंक : 07, नई दिल्ली, बुधवार, 09 नवम्बर , 2022

बारह माह में ग्यारह राज्यों के चुनाव तय करेंगे कांग्रेस का भविष्य

सुशील दीक्षित विचित्र

भारत जोड़ों यात्रा के बीच हिमाचल प्रदेश में विधानसभा चुनाव की घोषणा हो चुकी है। जबकि गुजरात विधानसभा के लिए मतदान की घोषणा होना महज वक्त की बात है। यात्रा जनवरी में समाप्त होगी और जब यह समाप्त होगी तब तक गुजरात और हिमाचल प्रदेश में विधानसभा चुनाव हो चुके होंगे और नौ विधानसभाओं के चुनाव सिर पर आ जायेंगे। इन चुनावों में भारत जोड़ों यात्रा की सफलता की असलियत भी सामने आ जाएगी और यह भी पता चल जाएगा कि हाशिये पर जा चुकी पार्टी कितने राज्यों में कामयाब प्रदर्शन करती है। चौदह महीने के अंतराल में ग्यारह राज्यों के चुनाव 2024 के लोकसभा चुनावों की झांकी होंगे और आधा दर्जन राज्यों में भाजपा की भी प्रतिष्ठा दांव पर लगेगी। इनमें भाजपा के सामने अपनी सत्ता बचाने की चुनौती होगी और उसे यह भी साबित करना होगा कि अभी उसकी साख बरकरार है।

हिमाचल प्रदेश वह पहला राज्य है जहाँ चुनाव की तारीख घोषित हो चुकी है। यहां 12 नवंबर को मतदान होगा और आठ दिसंबर को नतीजे आयेंगे। यहाँ भी भाजपा की सरकार है और किसी भी हालत में उसे वह गंवाना नहीं चाहेगी। जैसे कि संकेत मिल रहे हैं वहां कांग्रेस अच्छा चुनाव लड़ सकती है। हिमाचल प्रदेश के लिए माना जाता है कि यहाँ हर पांच साल सत्ता परिवर्तन होता है। एक बार कांग्रेस और दूसरी बार भाजपा सरकार बनाती रही है। लेकिन उत्तराखंड में भाजपा ने दोबारा सरकार बना कर जैसे यहां का मिथक तोड़ा वैसे वह 68 विधानसभा सीटों वाले हिमाचल प्रदेश का मिथक तोड़कर अपना प्रदर्शन दोहराने की कोशिश करेगी।

अधिकतर भाजपा शासित राज्यों में ही चुनावी ताल ठोंकने वाले अरविंद केजरीवाल और उनकी पार्टी हिमाचल प्रदेश में भी घुसपैठ की कोशिश कर रही है जो भाजपा के लिए कम लेकिन कांग्रेस के लिए अधिक खतरनाक है। दिल्ली और पंजाब में उसने ही कांग्रेस को हाशिये पर धकेल दिया। यहाँ भी उसकी कोशिश ऐसी ही होगी। वह भाजपा के साथ कांग्रेस को भी लपेटने की कोशिश करेगी। यह अलग बात है कि अभी तक जिन भाजपा शासित राज्यों में आप ने चुनाव लड़ा वहां उसके सभी प्रत्याशियों की जमानत जब्त हो गयी और एक तरह से वह भाजपा की मददगार ही साबित हुई। कांग्रेस के लिए हिमाचल में भी स्थित मजबूत नहीं कही जा सकती। पार्टी के अंदर ही न केवल कई तरह का असंतोष है बल्कि पार्टी के कद्दावर नेता कांग्रेस वर्किंग कमेटी के हर्ष महाजन और पूर्व अध्यक्ष पवन काजल भाजपा में शामिल हो गए, जिससे पार्टी के कार्यकर्ताओं का मनोबल भी गिरा हुआ है। टिकट आवंटन प्रक्रिया से भी भारी असंतोष है। पार्टी को नये सिरे से खड़ा करके भाजपा को चुनौती देना आसान नहीं होगा लेकिन आप और कांग्रेस के बीच से सत्ता तक फिर पहुँचने की राह निकालना भाजपा के लिए असम्भव नहीं तो मुश्किल अवश्य हो सकता है।

जिन छह राज्यों में भाजपा के सामने अपना पुराना प्रदर्शन करके सत्ता में वापसी करने का लक्ष्य होगा उनमें दूसरा नंबर गुजरात का है। गुजरात की 182 सीटों के लिए दिसंबर 2022 में चुनाव कराये जाने हैं। भाजपा का गढ़ कहे जाने वाले गुजरात में उसे कांग्रेस सीधी टक्कर देगी अथवा आम आदमी पार्टी भाजपा की वापसी की राह में दीवार बनेगी, यह तो चुनाव के बाद ही पता चलेगा लेकिन चुनाव प्रबंधन में आप पार्टी ने कांग्रेस से बाजी मार ली है। पिछली बार कांग्रेस ने भाजपा को कड़ी टक्कर देकर उसे सौ के अंदर समेट दिया, लेकिन इस बार कांग्रेस का शीर्ष नेतृत्व अभी राजस्थान में ही उलझा है। जबकि आप के केजरीवाल समेत तमाम नेताओं ने गुजरात में डेरा डालकर चरणबद्ध ढंग से अपना चुनाव प्रचार शुरू भी कर दिया है। पिछले सत्ताइस साल से सत्ता पर काबिज भाजपा के सामने कांग्रेस कोई बड़ी रेखा खींच पायेगी या नहीं या भविष्य की बात है लेकिन यह तय है कि आम आदमी पार्टी उसकी राह में भाजपा से भी बड़ा रोड़ा साबित हो सकती है। आप का वहां अभी जनाधार नहीं के बराबर है जबकि कांग्रेस के पास अभी भी काफी जमीन है। भाजपा का अपना कॉडर है और मतदाताओं का एक बड़ा समूह उसका स्वाभाविक वोट बैंक है। आप के लिए इसमें सेंध लगाना आसान नहीं होगा लेकिन कांग्रेस के वोट बैंक को वह प्रभावित कर सकती है। कांग्रेस के लिए आप गुजरात में वोट कटवा जैसी स्थिति पैदा कर सकती है। इसका सीधा फायदा भाजपा को होगा। तीस्ता सीतलवाड़ द्वारा मोदी खिलाफ रचे गए षड्यंत्र में कांग्रेस का सहयोग उजागर होना भी

“ भारत जोड़ों यात्रा के बीच हिमाचल प्रदेश में विधानसभा चुनाव की घोषणा हो चुकी है। जबकि गुजरात विधानसभा के लिए मतदान की घोषणा होना महज वक्त की बात है। यात्रा जनवरी में समाप्त होगी और जब यह समाप्त होगी तब तक गुजरात और हिमाचल प्रदेश में विधानसभा चुनाव हो चुके होंगे और नौ विधानसभाओं के चुनाव सिर पर आ जायेंगे। इन चुनावों में भारत जोड़ों यात्रा की सफलता की असलियत भी सामने आ जाएगी और यह भी पता चल जाएगा कि हाशिये पर जा चुकी पार्टी कितने राज्यों में कामयाब प्रदर्शन करती है।

कांग्रेस के लिए मुसीबत बन सकता है। भाजपा मोदी और गुजरात को बदनाम करने की कोशिश को मुद्दा बनाकर यदि कांग्रेस पर हमलावर हुई तो कांग्रेस के पास इसका कोई जबाब होगा।

कांग्रेस के लिए गुजरात में सबसे बड़ा संकट पायेदार नेताओं का अभाव है। उसके पास ऐसा कोई चेहरा नहीं जिसको आगे कर के वह चुनाव लड़ सके। कहने को भाजपा मुख्यमंत्री विजय रूपानी को आगे कर के चुनाव लड़ेगी, लेकिन असल में मोदी ही असली चेहरा होंगे और वहीं तय करेंगे की भाजपा का स्थानीय अगुआ कौन होगा। आप की स्थिति वहां कोई खास मजबूत नहीं है। उसे अपनी जमीन तैयार करनी है। पंजाब की जीत से वह उत्साहित भी है लेकिन केवल उत्साह के बलबूते भाजपा को गुजरात से धक्का दे कर नहीं हटाया जा सकता। इसके लिए उसे वहां के मतदाताओं का दिल जीतना होगा और मुफ्त या विभाजनकारी घोषणाओं से वह समृद्ध गुजरातियों को प्रभावित कर सकेगी यह हाल फिलहाल आसान नहीं लगता।

दिसंबर 2022 में चुनाव अभी निपटे ही होंगे कि अगले महीने जनवरी 2023 में मध्यप्रदेश में चुनावी बिगुल बज चुका होगा। मध्य प्रदेश में इस समय भाजपा की सरकार है और शिवराज सिंह चौहान मुख्यमंत्री हैं। एमपी के 2018 के चुनाव में भाजपा हार गयी थी। 230 में से उसे 109 सीटें ही मिली थीं और कांग्रेस 114 सीटें पाकर सब से बड़ी पार्टी बनकर उभरी थी। पंद्रह साल बाद कांग्रेस ने एमपी की सत्ता में वापसी की थी लेकिन मुख्यमंत्री कमलनाथ सरकार को पंद्रह महीने भी नहीं चला पाये। तेरह महीने के अंदर कांग्रेस पार्टी में भारी टूट हुई। राहुल गांधी की टीम के महत्वपूर्ण चेहरे ज्योतिरादित्य सिंधिया कांग्रेस से अलग होकर अपने गुट के विधायकों के साथ भाजपा में शामिल हो गए। कमलनाथ की सरकार गिर गयी और भाजपा फिर शिवराज सिंह चौहान को आगे कर के सत्ता पर काबिज हो गयी। कमलनाथ की सरकार गिरना पार्टी के शीर्ष नेतृत्व की असफलता थी। सिंधिया एमपी के बहुत कद्दावर नेता मनाए जाते हैं। उनके भाजपा ज्वाइन कर लेने से कांग्रेस मध्य प्रदेश में कमजोर पड़ गयी है। राज्य के कई क्षेत्रों से तो पार्टी का वजूद ही समाप्त हो गया। मध्य प्रदेश वह राज्य है जहाँ कांग्रेस अकेले दम पर भाजपा से लड़ सकती है। कहने को तो राज्य विधानसभा में दो बसपा और एक सपा विधायक भी हैं लेकिन दोनों पार्टियों का राज्य में कोई खास जनाधार नहीं है। अन्य पार्टियों की अनुपस्थिति में कांग्रेस और भाजपा ही बचती है जिनमें सीधा मुकाबला होना है। निसंदेह टक्कर कांटे की होगी। जोरदार होगी। कांग्रेस हर वह कोशिश करेगी जो उसे फिर सत्ता तक पहुंचा सके और भाजपा उसकी कोशिश को विफल कर फिर सत्ता सुख भोगना चाहेगी। इस जंग में वह ही जीतेगा जिसका का प्रबंधन अला दर्जे का होगा और इस मामले में भाजपा कांग्रेस से कहीं आगे है।

यहां से निपटकर चुनाव आयोग पूर्वोत्तर भारत की ओर रुख करेगा। पूर्वोत्तर में मेघालय, नागालैंड और त्रिपुरा में 2023 की मार्च में मतदान होगा। किसी समय पूर्वोत्तर भारत के इन तीनों राज्यों समेत सातों राज्यों में कांग्रेस की सरकारें थी। बाद में त्रिपुरा कम्युनिस्ट पार्टी ने छीन लिया तब भी छह राज्य कांग्रेस के पास लम्बे समय तक रहे। पिछले आठ साल पहले तक सातों राज्यों में अपना वर्चस्व बना पाना भी सपना था लेकिन भाजपा का काम आसान कर दिया राहुल गांधी ने। उन्होंने असम में कांग्रेस के सबसे बड़े नेता हेमंत शर्मा विस्वा को अपने आवास पर कुत्ते वाली प्लेट में कुत्ते वाले बिस्किट ऑफर कर के अपने पैरों पर खुद व खुद कुल्हाड़ी मार ली। विस्वा पूर्वोत्तर के बड़े नेताओं में शुमार रहे। वे भाजपा में शामिल हो गये और उन्होंने धीरे-धीरे पूर्वोत्तर से कांग्रेस को बाहर करना शुरू कर दिया। साठ विधानसभा सीटों वाले त्रिपुरा में पहले कांग्रेस और फिर कम्युनिस्ट पार्टी का वर्चस्व रहा। 2018 के चुनाव से पहले भाजपा वहां परिदृश्य तक में नहीं थी। 2018 में मिथक टूटा और पहली बार भाजपा की सरकार बनी। 2023 के चुनाव में उसके सामने अपनी सत्ता का रिन्युअल कराने की भारी चुनौती होगी। यह चुनौती उसे कांग्रेस से ही नहीं कम्युनिस्ट पार्टी से भी मिलेगी बल्कि कम्युनिस्ट पार्टी से अधिक कड़ी चुनौती मिलेगी। यह देखना बहुत दिलचस्प होगा कि त्रिकोणात्मक मुकाबले में भाजपा अपनी सत्ता बचा पाती है या नहीं। कम्युनिस्ट वापसी कर सकते हैं या नहीं और यह कि कांग्रेस अस्तित्व की लड़ाई जीत पाती है या नहीं।

मेघालय में भी विधानसभा के लिए साठ विधानसभा सीटें है। यह उन राज्यों में से भी है जहां पिछले चुनाव कांग्रेस का प्रबंधन फेल हो गया। 21 सीटें जीतकर सबसे बड़ी पार्टी बनने के बाद भी कांग्रेस सरकार बनाने में असफल रही और मात्र दो सीटें जीतने वाली भाजपा ने प्रबंधन के बलबूते कांग्रेस को सत्ता से बाहर कर दिया। यहाँ अजब खेल हुआ। भाजपा के रणनीतिकारों ने चुनाव परिणाम अपने विरुद्ध जाते देखकर बहुत चतुरता से 19 विधायकों वाली नेशनल पीपुल्स पार्टी, 6 सीटों वाली यूनाइटेड डेमोक्रेटिक पार्टी दो विधायकों वाली एचएसपीडीपी, चार विधायकों वाली पीडीएफ और एक निर्दलीय विधायक को मिलाकर एक गठबंधन बनाया।

एनपीपी के नेता और पूर्व लोकसभा अध्यक्ष पी संगमा के पुत्र कोनराड संगमा को मुख्यमंत्री बनाकर कांग्रेस के मंसूबों पर पानी फेर दिया। कांग्रेस का लेटलतीफ और अनुभवहीन नेतृत्व मुगालते में जीती हुयी बाजी हार गया और उसके विरोधी हार कर भी जीत गये। इस बार भी कुछ इसी तरह के समीकरण है। फर्क यह है कि इस बार भी भाजपा भले बहुमत का आकड़ा नहीं पा सके लेकिन अपनी सीटें बढ़ाने का जरूर प्रयास करेगी। कांग्रेस की उलझन का यहां भी वही कारण है जो हर जगह हैं कि संगठन कमजोर है, कोई बड़ा चेहरा पास नहीं हैं, कई विधायक पाला बदलकर उसके ही खिलाफ ताल ठोंक रहे हैं और शीर्ष नेतृत्व राजस्थान , गहलोत और भारत

“ हिमाचल प्रदेश वह पहला राज्य है जहाँ चुनाव की तारीख घोषित हो चुकी है। यहां 12 नवंबर को मतदान होगा और आठ दिसंबर को नतीजे आयेंगे। यहाँ भी भाजपा की सरकार है और किसी भी हालत में उसे वह गंवाना नहीं चाहेगी। जैसे कि संकेत मिल रहे हैं वहां कांग्रेस अच्छी तरह चुनाव लड़ सकती है।

“ भाजपा का गढ़ कहे जाने वाले गुजरात में उसे कांग्रेस सीधी टक्कर देगी अथवा आम आदमी पार्टी भाजपा की वापसी की राह में दीवार बनेगी, यह तो चुनाव के बाद ही पता चलेगा लेकिन चुनाव प्रबंधन में आप पार्टी ने कांग्रेस से बाजी मार ली है। पिछली बार कांग्रेस ने भाजपा को कड़ी टक्कर देकर उसे सौ के अंदर समेट दिया, लेकिन इस बार कांग्रेस का शीर्ष नेतृत्व अभी राजस्थान में ही उलझा है।

राजनीतिक तरकस
देश का सबसे तेज साप्ताहिक
राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार
वर्ष : 01 , अंक : 07, नई दिल्ली, बुधवार, 09 नवम्बर , 2022

इन एक्ट्रेसेस ने फिल्मों में पिता-पुत्र दोनों संग किया रोमांस

अपनी दमदार एक्टिंग से फैंस का दिल जीतने वाली एक्ट्रेसेस की जब किसी बॉलीवुड एक्टर के साथ जोड़ी हिट होती है तो फैंस उन्हें बार-बार उसी एक्टर के साथ देखना पसंद करते हैं। कई बार फिल्मों में कहानी के हिसाब से एक्ट्रेस तो फिट बैठ जाती है लेकिन उनके अपोजिट एक्टर फिट नहीं बैठ पाते हैं। ऐसे में फिल्म मेकर्स यह नहीं सोचते कि उस रोल के लिए जिस एक्टर का सिलेक्शन किया जा रहा है वह एक्ट्रेस से छोटा है या बड़ा। इस चक्कर में कई बार अपनी अलग-अलग फिल्मों में एक्ट्रेसेस को बाप और बेटे दोनों से रोमांस करना पड़ जाता है। बॉलीवुड में ऐसी कई एक्ट्रेस हैं जिन्होंने फिल्मों में काम करने के दौरान पिता और पुत्र दोनों से रोमांस किया है। चलिए बॉलीवुड की ऐसी एक्ट्रेसेस के बारे में जानते हैं जिन्होंने पिता-पुत्र दोनों से किया रोमांस

श्रीदेवी :

श्रीदेवी को बॉलीवुड की पहली सुपरस्टार कहा जाता है। 300 से ज्यादा फिल्मों में काम कर चुकी श्रीदेवी आज इस दुनिया में नहीं हैं लेकिन उनकी लाजवाब एक्टिंग आज भी उनके फैंस को दिवाना बना देती है। श्रीदेवी ने अपने अलग-अलग फिल्मों 2 पिता-पुत्रों की जोड़ी के साथ काम किया था। फिल्म 'वतन के रखवाले','फरिश्ते','नाका बंदी','सल्तनत' जैसी फिल्मों में उन्होंने धर्मेंद्र के साथ काम किया था। वहीं फिल्म 'निगाहें' में श्रीदेवी ने सनी द्योल के साथ रोमांस किया। इसके साथ ही श्रीदेवी ने अक्किनेनी नागेश्वर राव और उनके बेटे नागार्जुन के साथ भी काम किया है। फिल्म 'मुद्दुला मोगुडु' में उन्होंने अक्किनेनी नागेश्वर राव और 'गोविंदा','खुदा गवाह' और 'मिस्टर बेचारा' जैसी फिल्मों में नागार्जुन के साथ काम किया।

काजल अग्रवाल :

बॉलीवुड से ज्यादा साउथ की फिल्मों में सक्रिय काजल अग्रवाल ने सुपरस्टार चिरंजीवी और उनके बेटे रामचरण के साथ स्क्रीन शेयर किया है। काजल ने फिल्म 'कैदी नं. 150' में चिरंजीवी के साथ काम किया था जबकि 'मगधीरा' और 'गोविंदुडु अंदारिवडेले' जैसी फिल्मों में काजल ने उनके बेटे रामचरण संग ऑनस्क्रीन रोमांस किया।

हेमा मालिनी :

बाप-बेटे की जोड़ी के साथ ऑनस्क्रीन रोमांस करने वालों की लिस्ट में ड्रीम गर्ल हेमा मालिनी का नाम भी शामिल है। हेमा मालिनी ने फिल्म 'सपनों का सौदागर' से बॉलीवुड में डेब्यू किया था। इस फिल्म में उन्होंने राज कपूर के साथ स्क्रीन शेयर किया था। वहीं उनके बेटे रणधीर कपूर के साथ हेमा ने 'हाथ की सफाई' में काम किया था।

माधुरी दीक्षित :

बॉलीवुड की धक धक गर्ल माधुरी दीक्षित ने फिल्म 'दयावान' में विनोद खन्ना संग काम किया था जिसमें दोनों के बीच फिल्माये गये इंटिमेट सीन्स की काफी चर्चा हुई थी। इसके बाद माधुरी ने फिल्म 'मोहब्बत' में अक्षय खन्ना के साथ ऑनस्क्रीन रोमांस किया था।

डिंपल कपाड़िया :

श्रीदेवी की तरह ही डिंपल कपाड़िया ने भी बाप-बेटे की दो जोड़ियों के साथ अलग-अलग फिल्मों में काम किया था। डिंपल ने धर्मेंद्र-सनी द्योल और विनोद-अक्षय खन्ना की जोड़ी के साथ काम किया था। डिंपल ने फिल्म 'मस्त कलंदर' और 'दुश्मन देवता' जैसी फिल्मों में धर्मेंद्र के अपोजिट काम किया था।

वहीं 'मंजिल मंजिल' में वह सनी द्योल के साथ नजर आयी थी। इसके साथ ही डिंपल ने फिल्म 'इंसाफ', 'लेकिन', 'बंटवारा' और 'दबंग' फिल्मों में विनोद खन्ना की प्रेमिका और पत्नी का किरदार निभाया था। वहीं फिल्म 'दिल चाहता है' में डिंपल ने अक्षय खन्ना के साथ स्क्रीन शेयर किया था।

सूर्यकुमार यादव ने 244 की स्ट्राइक रेट से रन बनाए

राहुल की टी-20 वर्ल्ड कप में लगातार दूसरी फिफ्टी, फिर गेंदबाजों ने पूरा किया काम

मेलबर्न/ एजेंसी। टीम इंडिया ने रविवार को जिम्बाब्वे को हराकर टी-20 वर्ल्ड कप 2022 के सेमीफाइनल में जगह बना ली। भारतीय टीम सुपर-12 ग्रुप-2 में टॉप पोजीशन पर रहते हुए अंतिम चार में पहुंची है। भारत ने इस मैच में 13.3 ओवर तक 101 रन बनाने में 4 विकेट गंवा दिए थे। यहां से कुल 5 फैक्टर ऐसे रहे, जिनके चलते भारतीय टीम ने मुकाबला आसानी से जीत लिया। चलिए सभी फैक्टर्स को एक-एक कर जानते हैं।

भुवी-अर्शदीप का शानदार ओपनिंग स्पेल

186 रन खाने के बाद जिम्बाब्वे से फाइट बैक की उम्मीद कम ही थी। फिर भुवनेश्वर कुमार और अर्शदीप सिंह ने बेहतरीन ओपनिंग स्पेल के जरिए जिम्बाब्वे की पारी को बिखेर कर रख दिया। भुवी ने पहला ओवर मेडन डाला। इस वर्ल्ड कप में उनका यह दूसरा मेडन है। इसमें उन्होंने एक विकेट भी लिया। अर्शदीप ने भी अपने पहले ओवर में ही विकेट लिया। हमारे इस ओपनिंग बॉलिंग पेयर ने पहले 5 ओवर में सिर्फ 21 रन खर्च किए और 2 विकेट हासिल कर लिए।

राहुल-विराट की पार्टनरशिप

विराट कोहली इस मैच में 26 पर आउट हो गए थे। उनका स्ट्राइक रेट भी 104 ही रहा, लेकिन उन्होंने केएल राहुल के साथ दूसरे विकेट के लिए 60 रन की पार्टनरशिप कर भारतीय पारी को बिखरने से रोक लिया। विराट इस वर्ल्ड कप में 5 मैचों में सिर्फ दूसरी बार आउट हुए हैं।

हिन्दी का राष्ट्रीय राजनैतिक साप्ताहिक
राजनीतिक तरकस
देश का सबसे तेज साप्ताहिक
राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार
प्रचार है तो व्यापार है,
अपने व्यवसाय, राजनीति से जुड़ी
वार /त्यौहार/ जयंती/ पुण्यतिथि/ चुनावी अभियान का विज्ञापन
अब देश के लोकप्रिय हिंदी अखबार
एवं डिजिटल न्यूज़ पोर्टल
'राजनीतिक तरकस'
में दें।
जुड़े अपनों के साथ ऑनलाइन बुकिंग की अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
डॉ गौरी श्रीवास्तव
सलाहकार संपादक
Email:tarkasnews@gmail.com Mob:9990170069
Website: www.rajneetiktarkas.in